अध्याय
11

बालगोबिन भगत

रामवृक्ष बेनीपुरी

© JCERT not to be republished

लेखक परिचय

रामवृक्ष बेनीपुरी

जन्म- सन् 1899 ई.
जन्म-स्थान - बेनीपुर गाँव, जिला- मुजफ्फरपुर (बिहार)

मृत्यु - सन् 1968 ई.

इन्हें 'कलम का जादूगर' भी कहा जाता है ।

बचपन में ही माता- पिता के निधन के कारण उनका बचपन अभावों, कठिनाइयों और संघर्षों में बिता।

शिक्षा - मात्र 10वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त कर पाए और 1920 ईस्वी में राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन से जुड़ गए। कई बार जेल भी गए।

15 वर्ष की अवस्था में ही बेनीपुरी जी की रचनाएँ पत्र- पत्रिकाओं में छपने लगी। वे बेहद प्रतिभाशाली पत्रकार थे।

सम्पूर्ण साहित्य 'बेनीपुरी रचनावली' नामक पुस्तक के आठ- खंडों में प्रकाशित है।

प्रमुख-रचनाएँ-
उपन्यास- पतितों के देश में,
कहानी - चिता के फूल,
नाटक- अम्बपाली,
रेखाचित्र- माटी की मूरतें,
यात्रा-वृतांत - पैरों में पंख बाँधकर,
संस्मरण - जंजीरें और दीवारें आदि।

सम्पादित पत्र - पत्रिकाएँ-
तरुण भारत, किसान मित्र, बालक, युवक, योगी, जनता, जनवाणी, नयी धारा

पाठ-परिचय

बालगोबिन भगत

'बालगोबिन भगत' रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित एक रेखाचित्र है।

बालगोबिन भगत इस रेखा चित्र का मुख्य - पात्र है, जो मनुष्यता, लोक - संस्कृति और सामूहिक- चेतना का प्रतीक है।

© JCERT not to be republished

इस पाठ में यह दिखाया गया है कि कोई भी संन्यासी, साधु, या संत बाहरी वेशभूषा और बाह्य-अनुष्ठानों से संन्यासी नहीं होता, बल्कि संन्यासी के अंदर संपूर्ण मानवीय गुण होने चाहिए।

इन्हीं मानवीय गुणों के आधार पर बालगोबिन भगत लेखक को सन्यासी लगते हैं।

इस पाठ में सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार किया गया है।

लेखक ने बालगोबिन भगत के माध्यम से ग्रामीण जीवन की सजीव झाँकी प्रस्तुत किया है।

पाठ का सारांश :-

'बालगोबिन भगत' रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित एक रेखाचित्र है। इस पाठ का मुख्य पात्र बालगोबिन भगत है।

बालगोबिन भगत मँझोले कद के गोरे -चिट्टे आदमी थे। उम्र 60 वर्ष से ऊपर की थी। उनकी वेश —भूषा साधुओं के जैसी थी, किंतु वे साधु नहीं थे और न ही पूरी तरह से गृहस्थ ही थे। वे थोड़ा - बहुत खेती- बारी करते थे। वे एक सच्चे इंसान थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे और न ही वे कभी किसी दूसरे की वस्तुओं का इस्तेमाल करते थे।

वे कबीर को अपना 'साहब' मानते थे। खेती-बारी से जो भी अनाज पैदा होता था उसे अपने सिर पर लादकर 4 कोस दूर पैदल चलकर 'साहब' को भेंट चढ़ाते थे। साहब का मतलब 'कबीरपंथी मठ' से है। 'साहब' के दरबार में पहुँचाने के बाद उन्हें प्रसाद के रूप में जो भी अनाज मिलता था, उसी से अपना और अपने परिवार का गुजारा चलाते थे।

उनके परिवार में एक बेटा था और एक पतोहू थी। बेटा कुछ बोदा-सा और कुछ सुस्त था। बालगोबिन भगत के नजर में ऐसे ही लोगों को समाज के द्वारा सबसे ज्यादा प्रेम मिलना चाहिए। इसलिए वह अपने बेटे को बहुत प्यार करता था।

बालगोबिन भगत बहुत ही अच्छा ढंग से भजन गाते थे। वे कबीर के पदों को बड़े ही उत्साह और तन्मयता के साथ गाते थे। उनकी आवाज बहुत ही सुरीली थी।

जब आषाढ़ का महीना आता है तो वे काम करते समय कबीर के पदों को इतनी तन्मयता

© JCERT not to be republished

के साथ, ऊँची और सुरीली आवाज में गाते थे कि उनकी मधुर- आवाज आसपास काम करने वाले लोगों के कानों तक पहुँच जाती थी। उनके गीत को सुनकर खेतों में काम करने वाले लोगों के हाथ-पांव अपने-आप थिरकने लगते थे। काम करते समय गीत के लय और ताल के साथ लोगों के हाथ पाँव चलने लगते थे।

भादो महीने की आधी रात को जब वे 'अधरतिया' गीत - "गोदी में पियवा, चमक उठे सखिया, चिहुँक उठे ना" तथा "तेरी गठरी में लागा चोर, मुसाफिर जाग जरा" को इतनी सुरीली आवाज में तथा तन्मयता के साथ गाते थे कि आधी रात के सन्नाटे को भंग कर उनकी आवाज सोये हुए लोगों की कानों तक पहुँच कर उन्हें जगने पर मजबूर कर देती थी।

कार्तिक का महीना आता है तो वे 'प्रभातियाँ' गाना शुरू कर देते थे। यह गीत कार्तिक से लेकर फागुन के महीने तक चलती थी। वे भयंकर ठंड में भी सुबह जल्दी उठकर गाँव से 2 मील दूर पैदल चलकर नदी में स्नान करने के लिए जाते थे। लौटते समय तालाब के भिंड पर पूरब दिशा की ओर मुँह कर के वे बैठ जाते थे। हाथों में खँजड़ी लेकर प्रभातियाँ गाना शुरू करता थे। वे गाते- गाते इतना भाव- विभोर हो जाते थे कि उठकर नाचने लगते थे और भयंकर ठंड में भी उनके माथे पर पसीने की की बूंदे चमकने लगती थी।

गर्मी के मौसम में संध्या के समय अपने आंगन में चटाई बिछा कर 'संझा' गाना शुरू करते थे। 'संझा' गीत को सुनकर आसपास के लोग भी उनके सामने आकर बैठ जाते थे और तालियाँ बजा- बजाकर बालगोबिन जी का साथ देने लगते थे।

बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष तब देखने को मिला था, जब उनके बेटे की मौत हो गई थी। वह अपने बेटे के शव को आँगन में चटाई बिछा कर लिटा दिए थे। उसके ऊपर सफेद चादर डाल दिए थे। शव के ऊपर कुछ फूल बिखरा कर सिरहाने पर दीया जला दिए थे। बालगोबिन भगत अपने बेटे की शव के सामने बैठकर ऊँचे स्वर में गाना शुरू करते हैं। उनके गीत को सुनकर लोगों को आश्चर्य होता है कि जिसका बेटा मर गया है, वे कितने उत्साह, उमंग और तन्मयता के साथ गा रहे हैं। उनकी बहू अपने पति की याद में बिलख-बिलख कर रो रही थी। गाते-गाते कभी-कभी बालगोबिन भगत अपनी बहू को समझाते हैं और चुप कराने की कोशिश करते हैं कि आज आत्मा का मिलन परमात्मा से हो गई है, इसलिए यह समय रोने का नहीं है बल्कि उत्सव मनाने का है।

बेटे की मौत के बाद वे अपनी बहू को दूसरी शादी कराने के लिए मायके भेज देते हैं। बालगोबिन भगत की मृत्यु उन्हीं के अनुरूप होती है। प्रत्येक वर्ष गंगा- स्नान के लिए 30 कोस दूर पैदल ही जाते थे। गंगा-स्नान से अधिक आस्था वे संत-समागम और लोक-दर्शन पर रखते थे। आने- जाने में करीब चार-पाँच दिन लगता था। इस बीच वे उपवास रखते थे, कुछ भी खाते-पीते नहीं थे। उनकी उम्र 60 वर्ष से ऊपर होने के कारण इस बार वे बीमार पड़ जाते हैं, फिर भी भजन-

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

गाना और खेती- बारी करना नहीं छोड़ते हैं। एक दिन संध्या के समय गीत गाते हैं,किन्तु भोर में उनके गीत को लोगों ने नहीं सुना। पास-पड़ोस के लोग जा कर देखते हैं तो बालगोबिन भगत की मृत्यु हो चुकी थी।

शब्दार्थ-

मँझोले -	न बहुत बड़ा न बहुत छोटा।
कमली -	कंबल।
पतोहू -	पुत्र-वधू, पुत्र की पत्नी।
रोपनी -	धान की रोपाई ।
कलेवा -	सवेरे का जलपान या भोजन।
पुरवाई -	पूरब की ओर से बहने वाली हवा।
अधरतिया -	आधी रात के समय गाया जाने वाला गीत।
खँजड़ी -	ढपली के जैसा परंतु आकार में उससे छोटा एक वाद्य यंत्र।
निस्तब्धता -	सन्नाटा।
लोही -	प्रात: काल की लालिमा।
कुहासा -	कोहरा।
आवृत -	ढका हुआ।
कुश -	एक प्रकार की नुकीली घास।
बोदा। -	कम बुद्धि वाला।
संबल -	सहारा।
प्रभाती -	प्रभात में गाया जाने वाला गीत।
संझा -	संध्या के समय गाया जाने वाला गीत।

प्रश्न उत्तर:-

प्रश्न 1. खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे ?

उत्तर - बालगोबिन भगत खेतीबारी से जुड़े गृहस्थ होने के बावजूद निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु कहलाते थे -

1. बालगोबिन भगत अपने सिर पर कबीरपंथी टोपी, ललाट पर रामानंदी तिलक और गले में तुलसी के जड़ों की माला धारण करते थे।
2. वे कबीर को अपना आदर्श मानते थे तथा उनके आदर्शों और सिद्धांतों का अपने जीवन में गहराई से पालन करते थे।
3. वे सदा सच बोलते थे तथा कभी-भी झूठ नहीं बोलते थे।

© JCERT not to be republished

4. वे बिना पूछे किसी दूसरे की वस्तु को हाथ भी नहीं लगाते थे।
5. वे प्रतिदिन कबीर के पदों को सुबह - शाम तथा खेतों में काम करते समय गाते रहते थे।
6. खेती-बारी से जो भी अनाज पैदा होता था, वे सारे अनाज को सबसे पहले कबीर-पंथी मठ में पहुंचाते थे। वहाँ से उन्हें प्रसाद के रूप में जो भी अनाज मिलता था उसी से वे अपना और अपने परिवार का जीवन - यापन चलाते थे।
7. वे आत्मा और परमात्मा के मिलन को ही सच्चा आनंद मानते थे।
8. वे अपना सब कुछ ईश्वर को समर्पित कर चुके थे।

प्रश्न 2. भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर - बालगोबिन भगत का एक मात्र पुत्र था जिसकी मृत्यु हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में उनके बुढ़ापे का एकमात्र सहारा उनकी पुत्रवधू ही थी। यदि वह भी उनको छोड़कर मायके चली जाएगी तो उनके लिए एक लोटा पानी कौन लाएगा? उनके लिए भोजन कौन पकाएगा? जब भगत जी बीमार पड़ जाएँगे तो उनकी देखभाल तथा सेवा कौन करेगा? इसलिए भगत की पुत्रवधू उनको छोड़कर मायके नहीं जाना चाहती थी।

प्रश्न 3. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं ?

उत्तर - बालगोबिन भगत अपने बेटे की मृत्यु पर उनके पार्थिव शरीर को एक चटाई पर लिटा देता है। शरीर के ऊपर एक सफेद चादर ढक देता है तथा बहुत सारे फूल उसके ऊपर बिखरा देता है। भगत जी अपने पुत्र के शव के सिरहाने पर एक दिया जला देता है तथा शव के सामने बैठकर कबीर के पदों को गाने लगता है। उनका मानना है कि आज आत्मा और परमात्मा का मिलन हो चुका है। आत्मा और परमात्मा के मिलन के आनंद से बढ़कर कोई भी आनंद नहीं है। इस प्रकार बालगोबिन भगत शरीर को नश्वर और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया है।

प्रश्न 4. भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - बालगोबिन भगत का व्यक्तित्व:- बालगोबिन भगत एक सरल और सीधे-सादे व्यक्ति थे। वे अंदर और बाहर दोनों तरफ से साधु थे किंतु वे एक गृहस्थ भी थे। वे कबीर के आदर्शों का अपने जीवन पर गहराई से पालन करते थे। वे सदा सच बोलते थे, कभी भी झूठ नहीं बोलते थे। वे किसी को कष्ट नहीं पहुंचाते थे और न ही बिना पूछे किसी के वस्तु को हाथ लगाते। वे हमेशा लोगों के साथ खरा व्यवहार रखते थे।

बालगोबिन भगत एक अच्छे गायक थे। वे कबीर के पदों को इस तरह से गाते थे कि उनका संगीत समूचे माहौल पर जादू की तरह छा जाता था। उनके कंठ से निकले एक-एक शब्द स्वरबद्ध होकर कुछ ऊपर की ओर स्वर्ग तक पहुँचते तो कुछ आसपास के खेतों में काम कर रहे लोगों के कानों तक।

© JCERT not to be republished

वे सामाजिक रूढ़ियों पर भी प्रहार करने वाले व्यक्ति थे । सामाजिक परंपरा के विरुद्ध वे अपने पुत्र का दाह- संस्कार अपनी पुत्रवधू से करवाते हैं तथा समाज में विधवा-विवाह की परंपरा नहीं होने के बावजूद अपने पुत्रवधू की दूसरी शादी कराने के लिए उनके भाई को बुला कर बहू को मायके भेज देते हैं। वे समाज की परंपरा के विरुद्ध अपने पुत्र की मृत्यु पर शोक न मना कर उत्सव मनाते हैं । उनका मानना है कि शरीर नश्वर है और आत्मा अमर। आत्मा का परमात्मा के साथ मिल जाने से बढ़कर कोई आनंद नहीं है।

बालगोबिन भगत की वेशभूषा:- बालगोबिन भगत मँझोल कद के गोरे-चिट्टे आदमी थे। उनकी उम्र 60 वर्ष से ऊपर की थी । वे लंबे बाल तो नहीं रखते, किंतु उनकी सफेद दाढ़ी उनके चेहरे को जगमगा रही थी। वे बहुत कम कपड़े पहनते। कमर में एक मात्र लंगोट, सिर पर कबीरपंथी टोपी , मस्तक पर रामानंदी टीका जो औरतों की तरह नाक के एक छोर से शुरू होती थी तथा गले में तुलसी के जड़ों की माला धारण किए हुए रहते थे। इन तस्वीरों से बालगोबिन भगत साधु के जैसा दिखते थे, किंतु वे एक गृहस्थ भी थे।

प्रश्न 5. बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों की अचरज का कारण क्यों थी ?

उत्तर - बालगोबिन भगत की उम्र साठ वर्ष के ऊपर हो चुकी थी। बुढापा आने के बावजूद उनकी दिनचर्या में किसी प्रकार का कोई परिवर्तन नहीं होता है। खेत में काम करते समय वे कबीर के पदों को बड़े ही उत्साह के साथ गाते थे। वे अपने गीत के सुर और ताल के साथ बड़े ही स्फूर्ति से हाथ-पाँव चलाते थे। कड़ाके की ठंड में भी वह सुबह जल्दी उठते थे और गाँव से 2 मील दूर प्रतिदिन नदी में स्नान करने के लिए जाते थे। नदी- स्नान से लौटते समय गाँव की पोखर के भिंड पर पूरब की ओर मुँह कर बैठ जाते तथा हाथ में खँजड़ी लेकर कबीर के पदों को गाने लगते थे। कभी-कभी गाते-गाते वे इतने उत्साह से भर जाते कि खड़े होकर नाचने लगते थे। ठंड के मौसम में भी नाचते- नाचते उनके माथे से पसीने की बूदें छूटने लगती थी। गर्मी के मौसम में भी संध्या के समय अपने मित्र मंडली के साथ बड़े ही उत्साह और उमंग के साथ गाते थे। वे अपने संगीत के जादू से गर्म वातावरण को शीतल कर देते थे। बुढ़ापे की उम्र में भी वे प्रत्येक वर्ष 30 कोस दूर बिना खाए-पिए गंगा-स्नान के लिए पैदल ही जाते और पैदल ही लौटते थे। बुढ़ापे की अवस्था में भी उनके शरीर में स्फूर्ति रहती थी। भगत जी की दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था। भगत जी की इसी स्फूर्ति और दिनचर्या पर लोगों को अचरज होती थी।

प्रश्न 6. पाठ के आधार पर बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर - बालगोबिन भगत कबीर के पदों के अच्छे गायक थे। उनके कंठ की सुरीली आवाज बहुत ही मनमोहक थी। कबीर के पद के एक- एक शब्द भगत जी के कंठ से निकलकर सजीव हो उठते हैं।

खेतों में काम करते समय जब बालगोबिन भगत गाने लगते हैं तो उनकी सुरीली आवाज

© JCERT not to be republished

आसमान को चिरते हुए स्वर्ग और खेतों में काम करने वाले लोगों के कानों तक पहुँच जाती है। उनके मधुर- संगीत को सुनकर स्त्रियों के होंठ भी गुनगुनाने के लिए विवश हो जाती हैं। हलवाहों के पैर भगत जी की सुर और ताल के साथ उठने लगते हैं। बच्चे पानी से भरे खेतों में उछलने- कूदने लगते हैं। रोपनी कर रहे लोगों की अंगुलियाँ भगत जी के मधुर-संगीत के साथ धान के एक- एक पौधे को खेतों में पंक्तिबद्ध बिठाने लगती हैं।

भगत जी जब भादो की अधरतिया गाने लगते हैं तो उनका मधुर संगीत अर्धरात्रि के सन्नाटे को चीरते हुए सोए हुए लोगों की कानों में गूंजने लगता है। गर्मी के मौसम में संध्या के समय अपने मित्र-मंडली के साथ संझा गाने लगते हैं तो उनके मधुर गायन से गर्मी के ताप से तप्त गर्म वातावरण भी शीतल हो जाता है।

प्रश्न 7. कुछ मार्मिक प्रसंगों के आधार पर यह दिखाई देता है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर उन प्रसंगों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर - बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। इसकी पुष्टि के लिए कुछ मार्मिक प्रसंग निम्नलिखित हैं :-

1. बालगोबिन भगत के पुत्र की मृत्यु के समय वे सामाजिक परंपरा के विरुद्ध शोक न मना कर कबीर के पदों को गा-गा कर उत्सव मनाने लगे।
2. वे सामाजिक परंपरा के विरुद्ध अपने पुत्र का दाह-संस्कार पुत्र- वधू के हाथों करवाया।
3. वे अपने पुत्र का क्रिया-कर्म सामाजिक परंपरा के अनुसार नहीं करते हैं।
4. समाज में विधवा-विवाह का प्रचलन नहीं होने के बावजूद वे अपनी पुत्र-वधू की दूसरी शादी कराने के लिए उसके भाई को बुलाकर उसे मायके भेज देते हैं।

5.) बालगोबिन भगत अन्य साधुओं की तरह भिक्षा माँग कर जीवन-यापन चलाने के विरोधी थे।

प्रश्न 8. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं ? उस माहौल का शब्द-चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - धान रोपाई के समय बालगोबिन भगत की स्वर लहरियाँ समूचे माहौल को चमत्कृत कर देती थीं। आषाढ़ की रिमझिम फुहारें बरस रही थीं। समूचा गाँव खेतों में काम करने के लिए उतर गया था। कहीं हल चल रही थीं तो कहीं बच्चे पानी से भरे खेतों पर उछल-कूद कर रहे थे। औरतें कलेवा लेकर मेड़ों पर खड़ी थीं। भगत जी की अंगुलियाँ धान के एक-एक पौधे को पंक्तिबद्ध तरीके से बिठा रही थीं। भगत जी कीचड़ से लथपथ कबीर के पदों को गाने लगते हैं। उनके कंठ से निकले एक-एक शब्द संगीत बनकर कुछ ऊपर की ओर स्वर्ग तक पहुँचने लगती है तो कुछ खेतों में काम कर रहे लोगों के कानों तक। उनके संगीत को सुनकर बच्चे खेलते हुए झूम रहे थे। हलवाहों के पैर सुर और ताल के साथ उठने लगे थे। मेड़ों पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठती हैं और गुनगुनाने लगती हैं।

not to be republished © JCERT

रोपनी करने वालों की अंगुलियाँ बालगोबिन के कंठों से निकली सुर- ताल के साथ क्रम से चलने लगती हैं। इस तरह बलगोबिन की ये स्वर-लहरियाँ समूचे माहौल को जादू की तरह सम्मोहित कर लेती थीं।

रचना और अभिव्यक्ति-

प्रश्न 9. पाठ के आधार पर बताएँ कि बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन-किन रूपों में प्रकट हुई है ?

उत्तर - बालगोबिन भगत कबीर के आदर्शों और सिद्धांतों का अक्षरशः पालन करते थे। कबीर के प्रति उनकी श्रद्धा- भाव निम्नलिखित रूपों में देखी जा सकती है -

1. बालगोबिन भगत अपनी वेशभूषा कबीर की ही तरह बनाकर रखते थे। सिर पर कबीरपंथी टोपी, मस्तक पर रामानंदी टीका , गले में तुलसी की जड़ों की माला तथा कमर में एक लंगोट धारण करते थे।
2. जिस प्रकार कबीर गृहस्थ होते हुए भी सांसारिक मोह-माया से दूर थे, उसी प्रकार बालगोबिन भी गृहस्थ होकर साधुओं की भाँति जीवन व्यतीत करते थे।
3. बालगोबिन भगत अपने फसल की सारी ऊपज 'कबीरपंथी मठ' को भेंट चढ़ाते थे और वहाँ से उन्हें प्रसाद के रूप में जितना मिलता था वे उतने से ही अपना जीवन- यापन चलाते थे।
4. कबीर देश के विभिन्न क्षेत्रों में घूम- घूम कर भजन गाते थे और अपने सिद्धांतों का प्रचार करते थे। बालगोबिन भगत भी खेतों में काम करते समय सुबह-शाम कबीर के ही पदों को गाते फिरते थे।
5. कबीर के अनुसार मरने के बाद जीवात्मा का मिलन परमात्मा से होती है। बालगोबिन भी अपने पुत्र की मृत्यु के बाद यही कहा था। उन्होंने अपनी पुत्रवधू से शोक मनाने की बजाए उत्सव मनाने के लिए कहा था।
6. कबीर की ही तरह बालगोबिन भी समाज में प्रचलित रूढ़ियों को नहीं मानते थे।

प्रश्न 10. आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे ?

उत्तर - कबीर ने समाज में व्याप्त विभिन्न प्रकार के आडंबरों रूढ़ियों और कुरीतियों का खंडन किया था। समाज में व्याप्त जाति-पाति, ऊँच-नीच आदि भावनाओं का विरोध कर कबीरदास समाज को एक नई दृष्टि प्रदान की। उन्होंने आत्म ज्ञान पर अधिक बल दिया था। कबीर का जीवन सीधा-सादा, सरल और सहज था। बालगोबिन भगत कबीर की इन्हीं सब विशेषताओं के कारण उनके प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे।

प्रश्न 11. गाँव का सामाजिक- सांस्कृतिक परिवेश आषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है ?

उत्तर - भारत एक कृषि-प्रधान देश है। यहाँ के गाँव कृषि पर आधारित हैं। आषाढ़ का महीना आते ही वर्षा शुरू हो जाती है। गाँव

© JCERT not to be republished

के लोग कृषि कार्य हेतु अपने-अपने खेतों में उतर जाते हैं। बालगोबिन भगत के गाँव के लोग भी आषाढ़ का महीना आते ही कृषि कार्य हेतु उल्लास से भर जाते हैं।

आषाढ़ के रिमझिम बारिश के बीच भगत जी अपने मधुर गीतों को गा-गाकर खेत में काम करने लगता है। उनके गीत को सुनकर बच्चे पानी से भरे खेतों में उछलने- कूदने लगते हैं। हलवाहों के पैर भगत जी के गीतों के सुर और ताल के साथ उठने लगते हैं। मेड़ों पर खड़ी स्त्रियाँ भी भगत की मधुर स्वर-लहरियों से प्रभावित होकर गुनगुनाने लगती हैं। किसान अच्छे फसल की आश में झूम-झूम कर काम करने लगते हैं। इसलिए आषाढ़ चढ़ते ही गाँव का सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश उमंग और उल्लास से भर जाता है।

प्रश्न 12. "ऊपर की तस्वीर से यह नहीं माना जाए कि बालगोबिन भगत साधु थे।" क्या 'साधु' की पहचान पहनावे के आधार पर की जानी चाहिए ? आप किन आधारों पर यह सुनिश्चित करेंगे कि अमुक व्यक्ति 'साधु' है ?

उत्तर - एक सच्चे 'साधु' की पहचान उसके पहनावे के साथ- साथ उसके आचार- व्यवहार तथा जीवन-प्रणाली के आधार पर किया जा सकता है। एक सच्चे साधु का जीवन सरल और सादगी- पूर्ण होना चाहिए। वह हमेशा सच बोलने वाला हो। सच्चा साधु सामाजिक- कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का खंडन करता है, सांसारिक मोह-माया के बंधन से मुक्त रहता है। वह दूसरों की सहायता करता है तथा कभी किसी को कष्ट नहीं पहुँचाता है। उसके मन में ईश्वर के प्रति सच्ची श्रद्धा और भक्ति होती है।

बाल गोबिन भगत के पास उपर्युक्त सभी गुण देखने को मिलता है, इसलिए वे एक सच्चे 'साधु' थे।

प्रश्न 13. मोह और प्रेम में अंतर होता है। भगत के जीवन की किस घटना के आधार पर इस कथन का सच सिद्ध करेंगे ?

उत्तर - मोह और प्रेम में अंतर होता है। मोह में मनुष्य सिर्फ अपना स्वार्थ देखता है, परंतु प्रेम में वह अपने प्रिय- जनों की खुशी के बारे में सोंचता है।

बालगोबिन भगत को अपने पुत्र तथा पुत्रवधू से अगाध प्रेम था, लेकिन उन्होंने इस प्रेम की सीमा को लाँघ कर कभी मोह का रूप धारण नहीं किया। भगत जी चाहते तो पुत्र की मृत्यु के बाद मोह-वश पुत्रवधू को अपनी सेवा के लिए अपने पास रखता, परंतु वे ऐसा न कर उनकी खुशी के लिए उसकी दूसरी शादी कराने का निश्चय करते हैं । वे पुत्रवधू के भाई को बुलाकर जबरदस्ती उसके साथ मायके भेज देता है तथा उसकी दूसरी शादी कराने का आदेश देता है। यह घटना भगत जी का अपने पुत्रवधू के प्रति सच्चा प्रेम को दर्शाता है। भगत जी अपने पुत्र और पुत्रवधू की खुशी के लिए ऐसा करना उचित समझा।

भाषा-अध्ययन :-

प्रश्न 14. इस पाठ में आए कोई दस क्रिया-विशेषण छाँटकर लिखिए और उनके भेद भी बताइए।

© JCERT not to be republished

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

उत्तर - पाठ में आए दस क्रिया-विशेषण और उनके भेद निम्नलिखित है :-

1. बिल्कुल कम - बिल्कुल कम कपड़े पहनते।(परिमाणवाचक क्रियाविशेषण)
2. धीरे-धीरे - धीरे-धीरे मन तन पर हावी हो जाता। (रीतिवाचक क्रियाविशेषण)
3. जब-जब - जब-जब वह सामने आता। (कालवाचक क्रिया- विशेषण)
4. हर वर्ष - हर वर्ष गंगा-स्नान के लिए जाते। (कालवाचक क्रिया -विशेषण)
5. थोड़ा-थोड़ा - थोड़ा-थोड़ा बुखार आने लगा। (परिमाणवाचक क्रियाविशेषण)
6. सबेरे ही - इन दिनों सबेरे ही उठते थे। (कालवाचक क्रिया -विशेषण)
7. हँसकर - हँसकर टाल देते थे। (रीतिवाचक क्रिया- विशेषण)
8. जमीन पर - जमीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं । (स्थान वाचक क्रियाविशेषण)
9. दिन-दिन - वे दिन-दिन छिजने लगे। (कालवाचक क्रिया-विशेषण)
10. उस दिन - उस दिन भी संध्या में गीत गाए। (कालवाचक क्रिया- विशेषण)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न उत्तर

प्रश्न 1. सुबह–सुबह बालगोबिन भगत क्या गाते थे?

(a) भजन (b) गाना

(c) लोरी (d) कव्वाली

उत्तर-(a) भजन

प्रश्न 2. भगत जी अपने बेटे का खास ख्याल रखा करते थे, क्योंकि वह

(a) चालक था

(b) ईमानदार था

(c) प्रतिभावान था

(d) सुस्त और बोदा था

उत्तर-(d) सुस्त और बोदा था

प्रश्न 3. बेटे के मरने पर भगत जी क्या कर रहे थे?

(a) रो रहे थे (b) हँस रहे थे

(c) गा रहे थे (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) गा रहे थे

प्रश्न 4. भादों की रात कैसी होती है?

(a) चाँदनी (b) अँधेरी

(c) सुस्त (d) उजली

उत्तर-(b) अँधेरी

प्रश्न 5. लेखक बालगोबिन भगत के किस गुण पर मुग्ध थे?

(a) सरलता

(b) सहनशीलता

(c) मधुर संगीत–गायन

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(c) मधुर संगीत गायन

© JCERT not to be republished

प्रश्न 6. भगत जी भजन गाते समय क्या बजाया करते थे?

(a) ढोल (b) ढपली

(c) गिटार (d) खंजड़ी

उत्तर-(d) खंजड़ी

प्रश्न 7. भगत जी के बेटे का क्रिया–क्रम किसने किया?

(a) बहू ने (b) लेखक ने

(c) भगत जी ने (d) पड़ोसी ने

उत्तर-(a) बहू ने

प्रश्न 8. बालगोबिन का व्यवसाय क्या था?

(a) खेती (b) दुकानदारी

(c) पुस्तक–विक्रेता (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) खेती

प्रश्न 9. भगत जी बेटे के मरने के बाद अपनी बहू की दूसरी शादी क्यों करवाना चाहते थे?

(a) उसके सुखद भविष्य के लिए

(b) छुटकारा पाने के लिए

(c) सबकी नजर में अच्छा बनने के लिए

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) उसके सुखद भविष्य के लिए

प्रश्न 10. भगत जी की बहु उन्हें छोड़कर क्यों नहीं जाना चाहती थी?

(a) सामाजिक मर्यादा के कारण

(b) संपत्ति के लोभ में

(c) पति से प्यार होने के कारण

(d) ससुर की चिंता के कारण

उत्तर-(d) ससुर की चिंता के कारण

प्रश्न 11. बालगोबिन किसके पद गाया करते थे?

(a) रहीम के (b) सूरदास के

(c) कबीर के (d) तुलसीदास के

उत्तर-(c) कबीर के

प्रश्न 12. बालगोबिन के गीतों को सुनकर वहाँ उपस्थित सभी लोग क्या करते थे?

(a) उठकर चले जाते थे

(b) झूम उठते थे

(c) साथ में गाने लगते थे

(d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(b) झूम उठते थे

प्रश्न 13. भगत जी का बेटा कैसा था?

(a) समझदार (b) सुस्त और बोदा

(c) चालाक (d) बुद्धिमान

उत्तर-(b) सुस्त और बोदा

प्रश्न 14. बालगोबिन के गीतों में कैसा भाव व्यक्त होता था?

(a) प्रभु मिलन का (b) देशभक्ति का

(c) वियोग का (d) इनमें से कोई नहीं

उत्तर-(a) प्रभु मिलन का

© JCERT not to be republished